दिनांक 20/4/20

B.A + B.Sc.
हिन्दी रचना
विषय I
कविता कानन

डॉ० उपेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न — रसखान के काव्य की विशेषताओं का उल्लेख करें। या
अथवा
रसखान की भक्ति भावना या प्रेम भावना पर प्रकाश डालें। अथवा
रसखान का कवि परिचय प्रस्तुत करें।

उत्तर: — माथे पर मोर का पंख, कमर में पीताम्बर, हाथ में लकुटी तथा अधर पर मुरली धारण करने वाले रसखान एक अनोखे कवियों में हैं जो मात्रा में कम लिखकर भी कृष्ण भक्ति में अपनी विलक्षणकारी अनुभूतियों तथा निश्छल भाव के कारण अमर प्रतिनिधि कवि हो गये। कृष्ण भक्ति के आलोक में उनकी सूक्तियों एवं उनकी निष्ठाओं के संबंध को शब्द की धारा बनाने एवं लोकव्यापक करने वाला दूसरा व्यक्ति आज तक पैदा नहीं हुआ।

रसखान का जन्म सन् 1558 ई० तथा निधन 1618 ई० में ज्यादातर लोग मानते हैं जो मेरे जानने की सही प्रतीत होता है। ये पठान वंश के थे तथा इनका सम्बन्ध शाही खानदान से था। ये दिल्ली के रहने वाले थे पर कृष्ण प्रेम के आलोक में इन्होंने अपना निवास वृन्दावन ब्रजभूमि को बनाया। एक जनश्रुति के मुताबिक —

क्रमशः —

(२) क्रमशः

November 2016 उ.प्र.-+13-5 6.

08 विषय I हिन्दी रचना

313-053

Tuesday रसखान ~~[illegible]~~ 20/9/

October '16 November '16

उनका प्रेम एक आदर्श अभिमानी और कृपागर्भित नारी के प्रति, इसके बाद आराधना करके ये कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख हुए और वृंदावन आकर कृष्ण भक्ति में रम गए। इनके गुरु का नाम गोसाईं विट्ठलनाथ था। इन्होंने प्रेम वाटिका और सुजान रसखान नामक दो पुस्तकों की रचना की। ये मुसलमान होते हुए भी गोसाईं विट्ठलनाथ से दीक्षा लेकर कृष्ण भक्ति धारा के अनुयायी के श्रीनाथ जी के प्रेम में सदा लीन रहे।

रसखान कृष्ण भक्त कवि थे। इनके कृष्ण अवतारी व्यक्ति हैं। कृष्ण के अवतारीपन रूप से कृष्ण परिचित अवतार है जिसमें वेदों और पुराणों ने अनंत और अनादि कहकर पुकारा है। पर कृष्ण के इस रूप पर रसखान नहीं रीझ सके। जिनका पार महेश, गणेश नहीं पा सके हैं, रसखान को गोपियों के संग नाच करने वाले कृष्ण प्रिय हैं। रसखान उस कृष्ण पर मुग्ध हैं जिसके नाक पर मोर पंख, हाथ में लकुटी और कमर में पीताम्बर है —

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं,
गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी
बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥

रसखान का प्रवेश

अपने आराध्य के मंदिर के बाहरी आंगन तक ही सीमित नहीं है बल्कि उनका प्रवेश अन्तःपुर तक भी है। जिसका परमात्मा का

क्रमशः —